व्यंजनों का वर्गीकरण

डॉ०पूजा (सा.आ.)

हिंदी विभाग

जैन कन्या (पी०जी०) कॉलेज

मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)

व्यंजन का अर्थ एवं परिभाषा

अर्थ- व्यंजन उन ध्वनियों को कहते हैं जिनके उच्चारण में (मुख विवर में) वायु मार्ग में पूर्ण या अपूर्ण व्यवधान उपस्थित होता है।

परिभाषा – १- देवेंद्र नाथशर्मा के अनुसार व्यंजन वे ध्वनियां है जिन का उच्चारण करते समय नि: श्वास में कहीं न कहीं अवरोध होता है।

२- ब्लॉक तथा ट्रेग र के अनुसार जिन ध्वनियों के उच्चारण में वायु प्रवाह मुख के भीतर किसी न किसी रूप में पूर्ण रूप से बाधित हो उन्हें व्यंजन ध्वनि कहते हैं।

व्यंजनों का वर्गीकरण

- व्यंजनों का वर्गीकरण निम्नांकित आधारों पर किया जाता है।–
- **१-प्रयत्न के आधार पर –**
- स्पर्श संघर्षी
- संघर्षी
- नासिक्य
- पार्श्विक
- लुंठित
- उत्क्षिप्त

२- उच्चारण स्थान के आधार पर

दंत्य

तालव्य

मूर्धन्य

कोमल तालव्य

काकल्य

वत्सर्य

ओष्टय

दन्तोष्टय

३-प्राणत्व के आधार पर

- अल्पप्राण
- महापराण
- **४ स्वर तंत्री के आधार पर**
- अघोष
- सघोश

५- कोमल तालु की स्थिति के आधार पर

- मौखिक व्यंजन
- नासिक्य व्यंजन
- **६- संयुक्त- असंयुक्त के आधार पर**
- संयुक्त
- असंयुक्त
- द्वित्व

इस प्रकार विभिन्न आधारों पर व्यंजनों का वर्गीकरण किया जाता है